सैक्सी स्कूल टीचर

भाग – ३

रचयिता: रीना कँवर (c) 2006

Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.
This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

नीरा ढिल्लों की ज़िंदगी में फिर से बहारें थीं। हालांकि उसके पति में कुछ भी सुधार नहीं हुआ था और चुदाई के प्रती वो पहले जैसा ही उदासीन था पर नीरा को अब दूसरों से चुदाई का मज़ा मिल रहा था। नीरा का स्टूडेंट, रोहित, उसकी चूत की आग बुझाने में पूरी तरह से समर्थ था और नीरा को चोदने के लिए हमेशा तत्पर रहता था। साथ ही, पार्टी में विक्रम से चुदवाने के बाद नीरा ने विक्रम का पता और फोन नंबर भी खोज निकाला था। पार्टी के बाद से दोनों अनेक बार मिले थे। पार्टी में मेजबान के घर के पिछवाड़े में चुदाई हालांकि उत्तेजक थी पर पकड़े जाने के डर के बिना खुल कर पूरी तरह नंगे हो कर पूरे जोश में चुदवाने में कहीं ज्यादा मज़ा था। नीरा हफ्ते में कईं–कईं बार अपने पति को धोखा दे कर रोहित और विक्रम से चुदवाने लगी और चुदाई कि आवृति को कम करने का नीरा का कोई इरादा नहीं था।

एक दिन नीरा और रोहित होटल के कमरे में जोरदार चुदाई के दौर के बाद बिल्कुल नंगे लेटे हुए थे। उन दोनों की चुदाई हमेशा वासना और हवस से भरपूर होती थी... उसमें प्रेम का कोई स्थान नहीं था। दोनों इस बात को समझते थे और इसी में खुश भी थे।

"रोहित, उस दिन क्लास में पीछे से मेरी गाँड पकड़ के दबोचने के लिए तूने इतनी हिम्मत कैसे जुटायी थी?" नीरा ने उठ कर व्हिस्की का पैग बनाते हुए पूछा।

"कब?... जब हमने क्लास में पहली बार चुदाई की थी?" रोहित ने पूछा।

"नहीं... उससे पहले... मेरा ख्याल है कि जिस दिन हमने पहली बार चुदाई की थी, उससे एक दिन पहले क्लास में से बाहर निकलते हुए तूने यह हर्कत की थी।"

रोहित दिमाग पे जोर डाल कर याद करने की कोशिश करने लगा। *"मुझे तो याद नहीं*

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

groups.yahoo.com/group/reena_kanwar2002
www.asstr.org/~reena_kanwar

पड़ता कि मैंने ऐसा कभी किया था।"

अब चौंकने की बारी नीरा की थी। नीरा को उस दिन की घटना याद आने लगी। जब सब स्टूडेंट्स क्लास से बाहर निकल रहे थे तो किसी ने नीरा की गाँड पे हाथ रख कर दबोच दिया था और उसी क्षण नीरा जब घूम कर पीछे पल्टी थी तो उसे बहुत सारे लड़के क्लास से बाहर निकलते हुए दिखायी पड़े थे। अगले दिन दोषी लड़के को पकड़ने के लिए नीरा ने बहुत निर्लज्ज हो कर अपना अंग-प्रदर्शन करते हुए बहुत ही कामुक हरकतें की थीं और उसके बाद रोहित ने नीरा का लगभग बलात्कार ही कर डाला था। नीरा यह सब याद करके मुस्कुराने लगी। रोहित उस दिन काफी जोश और जिद्द में था और फिर नीरा भी जल्दी ही स्वेछा से चुदाई में शामिल हो गयी थी। उस पहली चुदाई की घटना के बाद नीरा ने मान लिया था कि रोहित वोह लड़का था जिसने उसकी गाँड दबोची थी।

"रोहित... क्या और लड़के भी मेरे बारे में बातें करते हैं?" नीरा ने अपना ड्रिंक पीते हुए धीमे से पूछा।

"हाँ... बहुत बातें होती हैं.... आखिर तुम सबसे गरम और सैक्सी टीचर हो कॉलेज में और फिर हमेशा क्लास में अपनी कामुक हरकतों से और कुछ ना कुछ दिखा कर लड़कों के तड़पाती रहती हो।"

"कुछ ना कुछ दिखाने से तेरा क्या मतलब है?"

"तुम जानती हो... टाँगें, चूचियाँ, पैंटी वगैरह...।"

यह सुन नीरा के मुखड़े पर लाली आ गयी। यह सब हरकतें करना एक बात थी पर अपने स्टूडेंट से अपनी हरकतों का इतना स्पष्ट वर्णन सुनना एक अलग बात थी।

"तो क्या बातें करते हैं लड़के मेरे बारे में?" नीरा ने आगे पूछा।

"तुम्हारे नाम की, हर रोज पता है कितनी मुठ मारी जाती है... सब तुम्हें चोदने का सपना देखते हैं।"

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

नीरा अपने डेस्क पे बैठी उसे घूर रही थी। नितेश का दिल जोर–जोर से धड़कने लगा।

“येस...मैडम...?” नितेश ने डरते हुए कहा।

“बैठो ज़रा यहाँ,” नीरा सबसे आगे की पंक्ति की कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए बोली।

नितेश डेस्क के पीछे कुर्सी पे बैठ गया और सोचने लगा कि उसने ऐसा क्या किया है जो टीचर ने उसे क्लास के बाद रूकने को बोला। उसने अपने दिमाग पे बहुत जोर डाला पर पर उसे कोई कारण नहीं सूझा। वोह गहरी सोच में डूबा था जब उसे अपनी टीचर की आवाज सुनायी दी। उसने नज़रें ऊपर उठायीं तो देखा कि बाकी सब क्लास से बाहर जा चूके हैं।

“मैं तुम से बात करना चाह रही थी,” नीरा ने बोलना शुरू किया, *“कई दिन हो गये इस बात को पर मुझे मौका ही नहीं मिला। तुम्हें नहीं लगता कि किसी की अनुमति के बिना उसे छूना गलत है?”*

नितेश के चेहरे के भावों से नीरा को विश्वास हो गया कि नितेश ही वोह लड़का है जिसने उसकी गाँड सहलायी थी। नितेश को बहुत सोचना पड़ा कि वोह क्या जवाब दे और फिर वोह बोला, *“आप बिल्कुल ठीक कह रही हैं... ढिल्लों मैडम।”*

“तो फिर तुमने ऐसा क्यों किया?”

“मैंने? मैं.. उह... मैं ऐसा नहीं करूँगा... आपसे किसने कहा कि मैंने कभी ऐसा किया?”

“नितेश चौहान... तुम्हें क्या लगता है कि मैं अँधी हूँ?... या मैं बेवकूफ हूँ? मैंने उस दिन तुम्हें क्लास के अंत में मुझे छूते हुए देख लिया था। तुम क्या सोचते हो कि तुम ऐसी हरकत करके बच जाओगे... और मुझे पता नहीं चलेगा...? या मैंने नहीं देखा कि मेरे चूतड़ किसने सहलाये?”

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

groups.yahoo.com/group/reena_kanwar2002
www.asstr.org/~reena_kanwar

उस युवा स्टूडेंट को अब पसीना आ गया। नितेश ने एक बार अपनी टीचर से नज़रें मिलायीं और फिर झुका लीं। उसे किसी कोने में घिरे हुए जानवर जैसा महसूस हो रहा था और उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वोह क्या करे। नितेश को लगा था कि किसी को पता नहीं चलेगा पर अब वोह पकड़ा गया था और उसे विश्वास था की अब उसे जरूर कॉलेज से निकाल दिया जायेगा। वोह सोच रहा था कि किसी दूसरे कॉलेज में भी उसे दाखिला मिलेगा या नहीं जब नीरा ने आगे बोलना शुरू किया।

“तो नितेश चौहान... तुम्हें अपनी सफाई में क्या कहना है?”

“ढिल्लों मैडम, आई एम सॉरी... मेरा वोह मतलब नहीं था...”

“तुम्हारा मतलब है कि तुम्हारे हाथ ने संयोग से चूत्तड़ पकड़ लिये?” नीरा ने व्यंग से ताना मरा।

“नहीं.. मैंने आपको छूना चाहा था पर ऐसा सहज ही हो गया... मुझे नहीं पता कि मेरे दिमाग में अचानक ऐसा करने का ख्याल कैसे आ गया था.... मुझे नहीं पता कि मैंने ऐसा क्यों किया। प्लीज़ मुझे माफ कर दीजिए। मैं वादा करता हूँ कि ऐसी गुस्ताखी फिर नहीं होगी।” बेचारा नितेश लगभग रोने वाला था। वो स्वभाव से थोड़ा दब्बू था।

“नहीं... यह काफी नहीं है,” नीरा कठोरता से बोली।

“पर मैडम.... अब मैं क्या करूँ.... मैं फिर से ऐसा ना करने का वादा करता हूँ।” नितेश की आँखों में आँसू आ गये।

“तुम कह रहे हो कि फिर ऐसा नहीं करोगे,” नीरा बोली।

“हाँ मैडम... मैं वादा करता हूँ कि फिर ऐसा नहीं होगा।”

“लेकिन यही तो मैं सुनना नहीं चाहती।” नितेश नज़रें ऊपर उठा कर अपनी टीचर की बात समझने की कोशिश करने लगा। वोह काफी परेशान और चकराया हुआ था। *“मैं ठीक से समझाती हूँ, नितेश...”* नीरा ने बोलते हुए रुक कर नितेश का सफेद पड़ा हुआ

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

चेहरा देखा। नीरा ने एक एक शब्द पे ज़ोर देती हुई आगे बोली, *"मैं... नहीं... चाहती... कि... तुम... मुझसे... ऐसा... वादा... करो।"* नितेश यह सुन कर और भी दुविधा में पड़ गया।

"तुम्हें क्या लगता है कि मुझे तुम्हारा छूना अच्छा नहीं लगा?"

"पर मैं समझा नहीं... मैडम।"

"आज क्लास मेरी पैंटी देखना तुम्हें अच्छा लगा?"

"यह क्या कह रही हैं, मैडम... आप?"

"आज मेरी पैंटी कौन से रंग की है? अब यह ढोंग मत करना कि तुमने कुछ देखा नहीं।"

"हरी... मेरा ख्याल है कि वोह हरे रंग की है," नितेश बोला। उसका सिर झुका हुआ था और वोह अपनी टीचर से नज़रें नहीं मिला पा रहा था।

"क्यों...? मेरे ऊँचे कुरते में से मेरी टाँगों के बीच में झाँकना अच्छा लगा?"

"मैडम... वोह ऐसा था कि..."

"क्या... कैसा था? यही ना कि मेरी ताँगें फैली हुई थीं? तुम्हें क्या लगता है कि मेरी टाँगें क्यों फैली हुई थी?"

"जरूर इत्तेफाक से ऐसा हुआ होगा।"

"नहीं... यह कोई इत्तेफाक नहीं था।" यह सुन कर नितेश का झुका सिर एक दम ऊपर उठ गया। उसके चेहरे पर दुविधा और हैरानी थी और उसका मुँह खुला हुआ था। *"हाँ मैं सही कह रही हूँ... मैंने तुम्हारे लिए ही अपनी टाँगें फैलायी थीं.... तुम्हें अपनी पारदर्शी महीन सलवार में से अपनी हरी पैंटी की झलक दिखाने के लिए।"*

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

"लेकिन क्यों?" नितेश ने हैरानी से पूछा।

"तुम्हारे लंड को खड़ा करने के लिए.... हाँ मैंने तुम्हारे लंड को सख्त होते देखा था। तो अब तुम समझ सकते हो कि मुझे तुम्हारा फिर से ना छूने का वादा क्यों स्वीकार नहीं है।"

नितेश ने अविश्वास से अपनी टीचर की तरफ देखा। नितेश ने उसकी बात तो सुनी पर उसके कानों को विश्वास नहीं हुआ। ऐसा तो मुमकिन ही नहीं था... तब तक नहीं जब तक नीरा अपने डेस्क से उतर कर नितेश की तरफ जाने लगी। नीरा ने अपनी एक टाँग उठा कर नितेश के डेस्क के ऊपर से झुलायी और उस लकड़ी के डेस्क पर बैठ गयी। फिर अपनी जाँघें फैलाते हुए नीरा ने अपने पैर उठा कर नितेश के एक-एक कँधे पर टिका दिए। नितेश ने जब नीरा की फैली टाँगों के बीच में उसकी झीनी सलवार में से उसकी हरी पैंटी देखी तो वोह सन्न रह गया। नीरा ने नितेश का ध्यान आकर्षित करने के लिए उसके सीने के ऊपर अपने सैंडलों की ऊँची नोकिली हील गड़ा दी।

"मैं तो यहाँ से देख नहीं पा रही हूँ," नीरा बोली, *"तुम देख कर बताओ कि क्या तुमने पैंटी का रंग ठीक बताया था?"*

"ह... हाँ"

"हुम्म्म, तो तुम उसे उतार कर मुझे क्यों नहीं दिखाते।"

नितेश को देख कर ऐसा लग रहा था कि उसकी साँसें रुकने वाली हैं और उसे दिल का दौरा पड़ने वाला है। लेकिन उसके काँपते हाथ नीरा की जाँघों को छूते हुए नीरा की कमर तक पहुँच गये। उसने नीरा की सलवार का नाड़ा खोला और पैंटी का इलास्टिक पकड़ कर दोनों को एक साथ नीचे खींचा। नीरा ने उसकी मदद करने के लिए अपनी गाँड उचकायी तो उसके सैंडलों की ऊँची हील और भी ज्यादा नितेश के सीने में गड़ गयीं। पर नितेश को इस समय किसी पीड़ा की परवाह नहीं थी। नितेश ने सलवार और पैंटी अपनी टीचर के घुटनों तक खींच दी। फिर नीरा ने बारी-बारी से अपन पैर उसके कँधों से हटाये और नितेश ने सलवार और पैंटी उसके पैरों सी झटक कर खींच दी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

नीरा की चमचमाती नंगी चूत अब बिल्कुल नितेश की आँखों के सामने थी। नीरा ने जब देखा कि उसका स्टूडेंट उसकी गरम पैंटी अपने चेहरे पर पकड़े हुए है तो वोह बोली, *"अच्छी लगी खुशबू?... सीधे खुशबू का स्रोत से ही क्यों नहीं सूँघते?"*

नितेश ने एक बार अपनी टीचर के चेहरे की तरफ देखा और फिर उसकी टाँगों के बीच में। वोह थोड़ा सा झिझका, और फिर एक बार नीरा के चेहरे पे नज़र डाल कर आगे झुकने लगा। *"इतनी जल्दी नहीं... चूत की खुशबू से पहले ज़रा मेरे पैरों और टाँगों की खुशबू और स्वाद तो ले लो"* नीरा ने अपना एक पैर नितेश के कँधे से हटा कर अपने सैंडल का तला नितेश के चेहरे पर रख दिया। नितेश अपनी जीभ नीरा के सैंडल के तले पर फिराने लगा और फिर उसके सैंडल की हील अपने मुँह में ले कर चूसने लगा। "मम्मम" नीरा आनन्दित हो कर सिसकारने लगी और फिर अपना दूसरा पैर भी नितेश के चेहरे के सामने कर दिया। नितेश की जीभ पूरे उत्साह से सैंडल के स्ट्रैपों और नीरा के पैरों की अँगुलियों के बीच में नाचने लगी। नितेश को सैंडलों की मादक महक और नीरा के पैरों के पसीने का तीक्ष्ण स्वाद बहुत अच्छा लग रहा था। नीरा ने धीरे-धीरे अपने पैर नितेश के चेहरे से हटा कर फिर से नितेश के कँधों पर टिका दिए और नितेश की जीभ अब नीरा की टाँगों को चूमते-चाटते आगे बढ़ने लगी। नितेश की सहुलियत के लिए नीरा ने भे थोड़ा आगे की और उचक कर अपने पैर नितेश की कुर्सी की पीठ पे रख दिए। नीरा की चूत पे अपना मुँह रखने के पहले से ही नितेश को अपनी टीचर की चूत की नशीली महक आने लगी। *"ओह... हाँ... चाटो इसे.... शर्माओ नहीं.... चाटो मेरी चूत,"* नीरा मस्ती से कुनकुनाई।

नितेश जो अभी तक थोड़ा हिचक रहा था, उसने आगे झुक कर अपने हाथ डेस्क पर सरका कर अपनी टीचर की नंगी गाँड पकड़ ली। कुछ दिन पहले जब उसने नीरा की गाँड को उसकी सलवार के ऊपर से कुछ क्षणों के लिए सहलाया था तो उसे लगा था कि उसने कितना बड़ा तीर मार लिया लेकिन अब उसकी अँगुलियाँ अपनी टीचर के नंगे चूतड़ों में धँसी हुई थी और उसका मुँह अपनी टीचर की चूत पे था। उसने कई बार नीरा की कल्पना कर के मुठ मारी थी पर यह अनुभव उन कल्पनाओं से कहीं ज्यादा बेहतर था।

जब नीरा ने नितेश का सिर पकड़ कर अपनी चूत पे उसका मुँह दबाया तो नितेश फटाफट नीरा की क्लिट चाटने लगा। नीरा मस्ती में जोर से सिसकने लगी और उसने

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

अपना घुटना मोड़ कर अपने दाँयी टाँग अपने स्टूडेंट की पीठ पर लपेट ली। डेस्क पे मजबूती से टिके अपने हाथों और नितेश की पीठ पर लिपटी अपनी टाँग के सहारे वोह अपने चूत्तड़ उचकाने लगी।

नितेश अपनी टीचर की लिसलिसाती लाल चूत को चाटते हुए अपनी जीभ को चूत में गहराई तक घुसा रहा था। *"ओहहहहहहह! नितेश। चाट मेरी चूत हरामजादे.... मेरी चूत को अपनी जीभ से चोद..."* हवस में दिवानी होती नीरा ने कराहते हुए कहा। नीरा की चूत में जबरदस्त सैलाब उठ रहा था। नितेश ने अपनी टीचर की निर्लज्ज चींख सुनी तो वो दुगुनी रफ्तार से चूत चाटने लगा।

"हाँ! हाँ। चाट इसे.. अपनी कुतिया टीचर की चूत! मैं... मैं... आआआआहहहहहह!!!!" अपने स्टूडेंट के चेहरे पे अपनी चूत को जोर जोर से उचकाती हुई नीरा कराहते हुए झड़ने लगी और उसकी चूत ने नितेश के मुँह को गर्म मलाईदार रिसाव से लबालब कर दिया। शाँत होने के बाद नीरा ने अपनी दाँयी टाँग धीरे से नितेश की पीठ और कंधे से उठायी और उचक कर डेस्क के दोनों किनारे अपनी टाँगें लटका कर सीधी बैठ गयी। फिर वोह डेस्क से नीचे उतरी और नितेश की साईड पे घुटनों के बल बैठ गयी और नितेश की कुर्सी को हल्के से अपनी तरफ घुमाया। वोह नितेश की पैंट खोलने ही वाली थी कि नीरा को उसके पैंट पे गहरे रंग का गीला धब्बा दिखायी दिया।

"ओह... हाय रे! तुझसे इतना भी रुका नहीं गया?" नीरा बोली।

नितेश का चेहरा शर्मिंदगी से सुर्ख हो गया। *"मैडम... आप परेशान ना हों.... मैं जानता हूँ कि क्या करना है।"*

नीरा ने अपने स्टूडेंट की पैंट खोल कर खींची और नितेश ने थोड़ा सा ऊपर उठ कर नीरा को पैंट उतारने में मदद की। कुछ ही क्षणों में नितेश की पैंट और वीर्य से भीगा अंडरवीयर उसके पैरों के पास थे। नीरा ने उसका लंड देखा जो अभी भी काफी कठोर था पर उसके लिसलिसे वीर्य से चुपड़ा हुआ था। नीरा ने आगे झुक कर अपने होंठ उसके लंड के इर्द-गिर्द लपेट दिए। जब उसने अपनी टीचर को वीर्य से चुपड़ा लंड अपने मुँह में डालते देखा तो नितेश की आँखें फैल गयीं।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

groups.yahoo.com/group/reena_kanwar2002 www.asstr.org/~reena_kanwar

नीरा को नितेश का वीर्य से लिसलिसा लंड मुँह में लेने में कोई आपत्ति नहीं थी और उसे नितेश के वीर्य का स्वाद पसंद आया। नितेश का इस तरह अपने पैंट में स्खलित हो जाना नीरा को काफी प्यारा लगा। नीरा को एहसास हुआ कि उसके सब स्टूडेंट्स उम्र में काफी छोटे हैं... जिन्होंने अभी अभी जवानी की दहलीज़ पर कदम रखा है। जब नितेश का लंड नीरा के मुँह में जाते ही बिल्कुल सख्त हो गया तो नीरा को लंड मुँह में लिये हुए ही हल्कि सी हँसी आ गयी। इन छोटी उम्र के युवकों में यही एक अच्छी बात थी कि झड़ने के बाद भी इनके लंड फटफट फिर से खड़े हो जाते हैं। नीरा उसके लंड को चूसते हुए उस पर लिपटे वीर्य को चाट कर साफ करने के लिए अपनी जीभ का ज्यादा ही इस्तमाल कर रही थी।

नितेश का लंड चूसते हुए नीरा बीच-बीच में अपने नज़रें उठा कर अपने स्टूडेंट के चेहरे की तरफ देख लेती थी। ज्यादातर तो उसे नितेश की आँखें बँद ही मिलीं पर कईं बार उसने देखा कि नितेश अपनी टीचर को लंड चूसते देखने के लिए अपने आँखें खोलने को बाध्य हो रहा था। नीरा जानती थी कि यह नितेश के लिए विशेष रोमांच की बात थी, विशेष कर के इसलिए कि वोह दोनों क्लासरूम में मौजूद थे और वोह क्लास में कुर्सी पे बैठा था और उसकी टीचर उसके सामने अपने घुटनों के बल बैठी उसका लंड चूस रही थी। नीरा से रहा नहीं गया और वोह जोर जोर से अपना सिर हिला कर नितेश का लंड चूसने लगी।

नीरा का इरादा तो नितेश का लंड चूस कर सख्त बनाने के बाद उससे चुदवाने का था पर इससे पहले कि वोह कुछ जान पाती, नितेश के अँगुलियाँ नीरा के बालों में उलझ गयीं और वोह अपने चूत्तड़ ऊपर उचकाने लगा। नीरा इस तरह अपने मुँह में लंड पेले जाने के लिए तैयार नहीं थी और नितेश का लंड अचानक अपने गले में ठेले जाने से नीरा की साँस काई बार उखड़ी और फिर उसे अपने गले में और जीभ पर वीर्य फूट कर गिरता महसूस हुआ। नितेश के स्खलित होने से नीरा को निराशा हुई पर फिर भी स्वेच्छा से नितेश के गाढ़े वीर्य की आखिरी बूँद तक निचोड़ के चटखारे ले कर पी गयी।

“आई एम सॉरी... मैडम, नितेश बोला, मैं खुद को रुक ही नहीं पाया... मुझे पहले ही आपको सावधान कर देना चाहिए था।”

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

"कोई बात नहीं... मुझे बुरा नहीं लगा... बस बात यह है कि..."

"मैं जानता हूँ... कभी भी मुँह के अंदर नहीं झड़ना चाहिए।"

"नहीं... नहीं... वोह बात बिल्कुल भी नहीं है.... तुम कभी भी मेरे मुँह में अपना वीर्य झाड़ सकते हो... मुझे तो अच्छा ही लगता है.... वोह तो बात बस इतनी सी है कि.... मैंने सोचा था हम चुदाई करेंगे।"

"नहीं... बस वो तुम दो बार झड़ चुके हो और..." नीरा ने बोलते हुए जब अपना मतलब जताने के लिए अपने नज़रें नितेश के लंड की तरफ झुकायीं तो उसका लंड देख कर वोह हैरान रह गयी। *"ओह मॉय गॉड... तेरा लंड तो अभी भी खंबे जैसा खड़ा है!"*

"हुँ... काफी सख्त है," नितेश थोड़ा सा संकोच करते हुए बोला, *"विशेषकर जब से आप इस कॉलेज में टीचर बन के आयी हैं।"*

"मॉय गॉड... इससे पहले के ये मुरझा जाये... जल्दी से अपना लौड़ा मेरी चूत में पेल दे..."

नीरा फटाफट नितेश का लंड पकड़ कर खड़ी हो गयी और नितेश को लंड से खींच कर खड़ा करने की चेष्टा की लेकिन अगले ही क्षण उसे अपनी इस पागलपन का एहसास हुआ। नीरा तो कामोत्तेजना से उन्मत्त हो रही थी और उसने नितेश की कलाई पकड़ कर उसे खड़ा किया। लेकिन जब नीरा ने नितेश को खींचा तो वोह अपने पैरों पे पड़ी पैंट में उलझ कर लुढक कर गिर गया। नीरा की नज़र तुरंट नितेश के लौड़े पे गयी, यह देखने के लिए कि कहीं वोह मुरझा तो नहीं गया लेकिन उसके लंड को गर्व से सीधे खड़े देख कर उसे राहत मिली। नीरा ने नीचे बैठ कर नितेश के जूते झटक कर उतारे और उसकी पैंट और अंडरवीयर खींच कर उसके पैरों से निकाल दिए। नीरा ने फिर उसे खींच कर खड़ा किया और अपने बड़े डेस्क की तरफ बढ़ गयी। फिर नीरा ने अपना कुर्ता अपनी कमर के ऊपर तक खींचा और डेस्क पे झुक कर अपनी गाँड मटकाने लगी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

जब नितेश के लंड से वीर्य झड़ना बंद हुआ तो उसके हाथ भी नीरा की चूंचियाँ छोड़ कर आगे डेस्क पर गिर गये और जब झड़ने के बाद का कामानंद उसके बदन में छाने लगा तो नितेश बीच-बीच में अपने चूत्तड़ों को झटकाने लगा। फिर नीरा को अपनी पीठ पर नितेश के ढहने के कारण उसका वजन महसूस हुआ। नितेश बिल्कुल स्थिर था और नीरा के कान के पास हाँफ रहा था। नीरा अपनी चूत को तब तक नितेश के लंड पे सिकोड़-सिकोड़ कर उसे निचोड़ती रही जब तक कि नितेश का लंड ढीला पड़ कर चूत से बाहर नहीं फिसल गया। फिर नीरा ने धैर्यपूर्वक नितेश के सम्भलने का इंतज़ार किया।

"वाह! ढिल्लों मैडम... गजब का मज़ा आया," नितेश सीधे खड़ा होता हुआ बोला, *"मैंने सोचा भी नहीं था की चोदने में इतना आनंद आयेगा।"*

नीरा सीधी हो कर पीछे घूमी और फिर अपनी पीठ डेस्क पे टिका कर नितेश की तरफ़ देख कर अविश्वास से बोली, *"तेरा मतलब है कि तूने अब से पहले कभी चुदाई नहीं की थी?"* फिर जब उसने नितेश का चेहरा लाल होता देखा तो जल्दी से आगे बोली, *"इसमें शर्मिंदा होने की कोई बात नहीं... मुझे तो फ़ख्र है कि मैं तेरे लंड से चुदने वाली पहली हूँ... उम्म.. क्या तेरा लंड चूसने वाली भी मैं पहली औरत हूँ...?"* जब नितेश ने सिर हिलाया तो नीरा बोली, *"हाय... काश मुझे पता होता तो मैं खास अच्छे से तेरा लंड चूसती।"*

"आपने बहुत अच्छी तरह से ही मेरा लंड चूसा था मैडम... मैं तो पूरी ज़िंदगी वो आनंद नहीं भूल पाऊँगा।"

नीरा ने आगे बढ़ कर नितेश का गाल चूमा और मुस्कुराती हुई बोली, *"थैंक-यू नितेश... यह मेरे लिए भी बड़ी बात है... मुझे खुशी है कि तुम्हें चुदाई का मज़ा देने वाली मैं पहली औरत हूँ और यह मैं हमेशा याद रखूँगी।"*

नीरा ने नितेश को कपड़े पहनने को कहा और खुद भी अपनी सलवार उठा कर पहनने लगी। जब नितेश ने अपने कपड़े पहन लिए तो नीरा ने अपने पैंटी उठा कर नितेश को पकड़ा दी। *"यह तेरी पहली चुदाई की यादगार के लिए," नीरा मुस्कुराते हुए बोली,*

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

"अब तुझे यहाँ से निकलना चाहिए।"

नितेश खुशी से मुस्कुराता हुआ क्लास-रूम से निकल गया। नीरा डेस्क पे बैठ कर अपना सामान समेटने लगी। दरवाजा खुलने की आवाज सुन कर नीरा ने घूमते हुए सोचा कि नितेश शायद कुछ भूल गया होगा लेकिन एक दूसरे टीचर को क्लास में दाखिल होते देख वोह सन्न रह गयी।

"आलोक जी... आप इस समय यहाँ क्या कर रहे हैं?" नीरा ने सहज होते हुए प्रोफेसर आलोक त्रिपाठी से पूछा।

"वैसे तो मैं कुछ देर पहले भी आया था... पर नीरा जी आप... उम्म... कुछ व्यस्त थीं।"

"क्या? ओह मॉय गॉड... तो आपने सब देखा?" नीरा का दिमाग जोर से दौड़ने लगा। नीरा को याद आया कि नितेश को फुसलाने के लिए उसने सब स्टूडेंट्स के बाहर जाने के बाद दरवाजा बंद तो किया था पर वोह चिटकनी लगाना भूल गयी थी।

"हाँ... वास्तव में दो बार... पहली बार आप अपने घुटनों पे थीं अगर आप मेरा अभिप्राय समझ रही हैं तो... और दूसरी बार आप क्लास-रूम में आगे अपने डेस्क के पास थीं।"

"तो अब आप क्या कार्यवाही करेंगे?" नीरा ने बहुत डरते हुए पूछा। नीरा को अपनी पूरी ज़िंदगी... अपने शादी... अपनी नौकरी... अपनी इज़्ज़त... खाक में मिलती नज़र आ रही थी।

"मैं क्या करूँगा...? मैं भी चोदूँगा तुम्हें...।"

"क्या? लेकिन आप तो शादी-शुदा हैं।"

"वाह! यह तो वही बात हुई कि कोयला कढ़ाई को काला कहे!" यह सुन कर नीरा को एहसास हुआ कि उसने कितनी बेतुकी बात कही थी। *"लेकिन पहले मैं अपना लंड तुमसे चूसवाऊँगा।"*

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

प्रोफेसर आलोक त्रिपाठी ने ठीक से दरवाजा बंद कर के चिटकनी लगायी और नीरा के पास आकर खड़े हो गया। नीरा के सामने आ कर आलोक ने नीरा की कमीज़ उसके बदन से निकाली तो नीरा ने कोई विरोध नहीं दिखाया और जब आलोक ने उसकी ब्रा के हुक खोले तो नीरा ने खुद ही अपने कँधे झटक कर ब्रा नीचे गिरा दी। नीरा की दोनों चूंचियों को एक साथ मसलते हुए आलोक उसके निप्पल मरोड़ने लगा। नीरा के निप्पल तुरंत कड़क हो गये। आलोक आगे झुक कर नीरा की एक चूंची को मुँह में लेकर चूसते हुए अपने जीभ उसके कड़क निपाल पर फिराने लगा। नीरा ने अपनी आँखें बंद कर के आलोक के सिर के पीछे हाथ रख कर उसे पकड़ लिया और आलोक की जीभ के स्पर्श से उत्तेजित होने लगी।

जब आलोक पीछे हटा तो नीरा ने देखा कि वोह अपनी शर्ट और अंडरवीयर में खड़ा था। जब वोह नीरा की चूंची चूसने में व्यस्त था तब उसने अपने पैंट खोल कर अपने पैरों पे गिरा दी थी। आलोक ने पीछे हट कर अपने जूते निकाले और फिर अपनी पैंट में से एक-एक करके अपने पैर बाहर निकाले। नीरा की आँखें आलोक की टाँगों के बीच में जमी थीं। आलोक का लंड तो सख्त नहीं लग रहा था लेकिन उसके अंडरवीयर में उभार काफी बड़ा था। फिर जब आलोक ने अपना अंडरवीयर नीचे किया तो नीरा ने जोर से साँस ली। आलोक का लंड बहुत ही बड़ा था। जैसे ही आलोक ने अपनी टाँगों से अंडरवीयर निकाला, नीरा झट से अपने घुटनों पे बैठ गयी।

“अभी नहीं... पहले अपनी सलवार निकालो,” आलोक बोला।

नीरा ने बिना हिचकिचाये जल्दी से अपनी सलवार उतार कर किनारे फेंक दी। अब उसने सिर्फ सफेद रंग के हाई हील सैंडल पहने हुए थे और इन सैंडलों के अलावा बिल्कुल नंगी थी। नीरा फिर से घुटनों पे बैठ कर आलोक का लंड अपने हाथों में पकड़ कर उसकी लंबाई का अँदाज़ा लगाने लगी।

“ढीली अवस्था में ८ इंच का है,” आलोक ने कहा जिसे उसने नीरा का मानस पढ़ लिया हो, *“लेकिन मैं वादा करता हूँ कि सख्त बन जाने पर यह ज्यादा बड़ा हो जायेगा... हे... हे... हे... कभी लिया है ग्यारह इंच का लौड़ा अपनी चूत में?”*

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

groups.yahoo.com/group/reena_kanwar2002 www.asstr.org/~reena_kanwar

"ग्यारह इंच?.... मॉय गॉड... मेरी चूत में नहीं समायेगा ये!"

"इस बात की चिंता मत करो... आराम से समायेगा!"

बातें करते हुए नीरा अपने सहकर्मी का लंड सहला रही थी। वोह उसके हाथ में बड़ा तो हुआ लेकिन उतना नहीं जितना आलोक डींग हाँक रहा था.... पर पारिभाषिक रूप से वोह अभी पूरी तरह खड़ा नहीं हुआ था। नीरा ने अपनी कजरारी आँखों को मटका कर आलोक की तरफ ऊपर देखा और अपने होठों पे जीभ फिराते हुए नीरा ने आगे झुक कर अपना मुँह खोला और लंड के सुपाड़े को मुँह में भर लिया। अपने होंठों को लंड के इर्द-गिर्द कस कर वोह उसे चूसने-चाटने लगी। नीरा की खुशकिस्मती से लंड उसके मुँह में और फूल गया। नीरा को पीछे हटना पड़ा जब बढ़ता कंड उसके हलक में घुसने लगा। जब नीरा ने लंड अपने मुँह से बाहर निकाल कर देखा तो वो बिल्कुल कठोर हो गया था और बहुत विशाल बन गया था। नीरा को इसमें अब बिल्कुल शक नहीं था कि लंड का माप इस समय कम-से-कम ग्यारह इंच था।

नीरा ने आलोक का लौड़ा अपनी दोनों मुठ्ठियों में ऐसे पकड़ लिया जैसे कि क्रिकेट का बैट पकड़ा जाता है और फिर भी मुँह में लेने जितना लंड बाकी था। अपनी मुठ्ठियों में लंड को मरोड़ती, खिसकाती और निचोड़ती हुई नीरा उसे मुँह में लेकर पूरे जोश और क्षमता से चूसने लगी। नीरा को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसका मुँह लंड से इतना भरा हुआ था और वोह कल्पना करने लगी कि इतना बड़ा लंड चूत में कैसा मज़ा देगा... उस चूत में जिसमें कभी भी इतना बड़ा कुछ नहीं गया। यह सोचकर नीरा के पूरे बदन में उत्तेजना से सिरहन दौड़ गयी। इतने बड़े लंड से चुदवाने के बाद तो गधे के लंड से चुदवाना भी मुश्किल नहीं था।

आलोक के हाथ जब नीरा को उस विशाल लंड से दूर हटाते महसूस हुए तो वोह पूरी शक्ति से अपने होंठ उस पर जकड़ने लगी। नीरा ने आलोक के लंड पे नीचे से अपनी मुठ्ठियाँ कस दीं और अपने होंठों में उस विशाल लौड़े को जकड़ लिया। लेकिन अपने मर्द-सहकर्मी की ताकत का वोह मुकाबला नहीं कर सकी जिसने जल्दी ही अपने लंड से नीरा का मुँह हटा दिया और नीरा की बगलों में अपने हाथ डाल कर उसे उठाने लगा। अगले क्षण नीरा डेस्क पर बैठी हुई थी पर अभी भी आलोक का विशाल लौड़ा अपने दोनों हाथों में पकड़े हुए थी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

"मैंने तो सिर्फ तुम्हें उधार दिया था... रखने के लिये थोड़ा ही दिया था," आलोक हँसते हुए बोला।

"क्या?"

"मेरा लौड़ा... अब तो इसे छोड़ दो...!" नीरा ने उसका लौड़ा छोड़ दिया और आलोक ने उसके पैर पकड़ कर उसकी टाँगें ऊपर उठायीं और उन्हें खोल कर नीरा की चूत ताकने लगा। *"हुम्म्म... अगली बार तुम्हारी ये चूत जरूर चूसूँगा... पर अभी तो यह रस टपका रही है... किसी दूसरे के वीर्य से भरी चूत में अपना लंड पेलने में मुझे कोई दिक्कत नहीं पर उसमें मैं अपनी जीभ नहीं पेल सकता।"*

आलोक ने नीरा की टाँगें और ऊपर उठा कर अपने कँधों पे डाल दीं। नीरा डेस्क पे पीछे की तरफ गिरी तो उसने अपनी कोहनी और हाथ डेस्क पे टिका कर खुद को सहारा दिया। नीरा ने अपनी फैली हुई टाँगों के बीच में से अपने चूत में घुसने को तैयार उस विशाल मूसल पर नज़र डाली। जब आलोक ने अपना लौड़ा नीरा की चूत के द्वार पे रखा तो नीरा ने अपने साँस रोक ली। वोह उत्तेजित होने के साथ-साथ घबड़ायी हुई भी थी।

नीरा को अपनी चूत पे दबाव महसूस हुआ तो वो लालसा से उस दबाव के स्रोत की तरफ ताकने लगी। आलोक अपना लंड पकड़ कर नीरा के रिसती चूत में घुसेड़ने लगा। नीरा उसके राक्षसी लौड़े को अपनी चूत में चीरते हुए धँसते देखने लगी। इतने मोटे और विशाल लंड को अंदर समायोजित करने के लिए अपनी चूत के सुर्ख होंठों को फैलते हुए देख कर नीरा बहुत उत्तेजित होने लगी। लेकिन जब सुपाड़े से थोड़ा ज्यादा लंड उसके चूत मे घुसा तो सिर्फ उस दृश्य ही नहीं नीरा की आह निकल गयी... बल्कि लंड बहुत ही बड़ा महसूस हो रहा था और चूत की दीवारों पे बहुत दबाव डाल रहा था। और फिर थोड़ा और लंड नीरा की चूत में समा गया... फिर और ज्यादा... फिर थोड़ा और ज्यादा। नीरा साँस नहीं ले पा रही थी और आखिर में उसने अपनी आँखें बंद करके अपना निचला होंठ काट लिया।

"कैसा लग रहा है अब?" आलोक ने नीरा के कान में फुसफुसा कर कहा।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

नीरा ने अपनी आँखें खोलीं तो आलोक का चेहरा अपने चेहरे के पास पाया। *"ये पूरा नहीं समायेगा... मैं नहीं झेल पाऊँगी... बहुत ही बड़ा है तुम्हारा लंड।"*

"मेरी प्यारी चुदक्कड़ रानी.... तूने पूरा ले लिया है... मेरा पूरा लंड तेरी चूत में है अब।"

"ओह मॉय गॉड... मुझे विश्वास नहीं हो रहा... इतना विशाल लंड मेरी चूत में... ओह मॉय गॉड... ओह मॉय गॉड... अब क्या?"

"हाहाहाहा... मुझे लगा तेरे जैसी चुदक्कड़ चुदाई में एक्स्पर्ट है... हाहाहाहा...।" आलोक हँसा।

"लेकिन तुम्हारा लंड इतना बड़ा है... इससे तुम मुझे नहीं चोद सकते।"

"ना सिर्फ मैं इससे चोद सकता हूँ... बल्कि मैं तुम्हारी चूत इससे चोदूँगा।"

आलोक ने नीरा के जवाब का इंतज़ार नहीं किया और धीरे से अपना लौड़ा थोड़ा सा बाहर खींच के उतनी ही धीरे से फिर अंदर ठाँस दिया। नीरा की आँखें आलोक के चेहरे पे टीकी थीं पर उसे देख नहीं रही थी क्योंकि नीरा की सब इंद्रियाँ अपनी टाँगों के बीच में एकाग्रित थीं और उस विशाल मूसल लंड पर केंद्रित थीं जो उसकी चूत में घुस कर उन जगहों को स्पर्श कर रहा था जो अभी तक अनछूयी थीं।

आलोक ने धीरे-धीरे चोदना चालू किया। हर बार जब वोह अपना लंड बाहर खींचता तो नीरा *"आआआआहहहह"* करती और और हर बार जब वोह अपना लंड वापस चूत में अंदर ठाँसता तो नीरा *"ऊऊऊऊहहहह"* करके कराहती। जल्दी ही नीरा की कराहें *"आआआआहहहह.... ऊऊऊऊहहहह.... आआआआहहहह.... ऊऊऊऊहहहह...."* से *"आआहह... ऊहह... आआहह... ऊहह..."* में बदल गयीं और फिर जैसे-जैसे आलोक और जोर से चोदने लगा, नीरा सिर्फ *"आँ... आँ... घों... घों..."* करके घुरघुरा पा रही थी। आलोक अब अपना ग्यारह इंच लंबा लंड पागलों की तरह जोर- जोर से धक्के मारता हुआ नीरा की चूत में पेल रहा था।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

नीरा अपनी टाँगों के बीच की सनसनी में खोयी हुई थी। उसने ऐसा कभी भी महसूस नहीं किया था जैसा कि वो अभी महसूस कर रही थी। नीरा को इतने बड़े लौड़े से चुदते हुए ख्याल आ रहा था कि किसी गधे से चुदने में कैसा लगेगा। नीरा की चूत को इतना फैला कर चोदने के साथ-साथ वो लंबा-मोटा लौड़ा लगातार नीरा की क्लिट को भी घिस रहा था। लम्बे लंड के जोरदार धक्कों को झेलती हुई नीरा के खुले हुए होठों से मस्ती भरी कराहटें और गालियाँ निकल रही थीं। *"ऐंह... ऐंह... बहनचोद आलोक... चोद मुझे... कितना मोटा है तेरा लौड़ा! चोद हरामी....!"* इसी तरह तीखे स्वर से चींखती-कराहती नीरा कई बार झड़ी पर आलोक उसे बिना रुके चोदता जा रहा था और नीरा फिर से कई बार झड़ी।

इतनी बार झड़ने के कारण नीरा अब बदहवासी की हालत में थी। ठीक जिस समय नीरा को लगने लगा कि अगर वो एक बार भी फिर झड़ी तो उसकी जान ही निकल जायेगी, तभी आलोक के तेज़ लंबे धक्के छोटे-छोटे झटकों में परिवर्तित हो गये और आलोक ने नीरा की टाँगें कस कर अपनी बाँहों में पकड़ लीं। नीरा ने आलोक का वीर्य अपनी चूत में इतनी वेग से छूट कर बहते हुए महसूस किया कि ज़िंदगी में पहले कभी इतनी ज्यादा ताकत से वीर्य अपनी चूत में निकलता महसूस नहीं किया था। नीरा को ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने पानी का पाइप उसकी चूत में घुसेड़ कर पूरा नल खोल दिया हो।

जब आलोक का चिपचिपा लंड नीरा की चूत से बाहर निकलने तो नीरा ने मुँह खोल कर साँस ली और अपने चूत को जकड़ कर आलोक के लंड को चूत के अंदर ही रोकने की चेष्टा की। जिस लंड को अपनी चूत में लेने से नीरा पहले डर रही थी उसी लंड से चुदवाने में उसे इतना आनंद और तृप्ति मिली थी कि वोह इतनी आसानी से छोड़ना नहीं चाहती थी। लेकिन अंत में वोह पूरा बाहर निकल आया और नीरा की चूत में से ढेर सारा वीर्य बाढ़ की तरह बाहर बहने लगा।

नीरा ने जब अपनी आँखें खोलीं तो आलोक को अपनी तरफ देखते हुए मुस्कुराते पाया। नीरा ने सीधे बैठ कर अपनी बाँहें आलोक की गर्दन में डाल कर उसका चेहरा अपनी तरफ खींचा और अपने होंठ आलोक के होंठों से दबा कर अपनी जीभ आलोक के मुँह में घुसेड़ दी। दोनों तब तक कामुक्ता से किस करते रहे जब तक आलोक साँस लेने के लिए पीछे नहीं हटा।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

groups.yahoo.com/group/reena_kanwar2002
asstr.org/~reena_kanwar

"तो मैं ये समझूँ कि तुम्हें चुदाई पसंद आयी? आलोक ने पूछा।" नीरा ने कुछ जवाब नहीं दिया क्योंकि वोह अभी भी आनंद से कराह रही थी। *"तुम्हारे पास कोई टीशू पेपर या रूमाल वगैरह है? मैं पैंट पहनने से पहले अपना लंड साफ करना चाहता हूँ।"*

नीरा जब अपने डेस्क से फिसलते हुए नीचे उतरी तो उसके चेहरे पर स्वप्नमय भाव थे। लेकिन वोह डेस्क से उतर कर खड़ी नहीं हुई, बल्कि, अपने घुटनों के बल बैठ कर अपने सहकर्मी के चिपचिपे लौड़े को लालसा से देखने लगी। नीरा को अपनी चूत में से आलोक का वीर्य बाहर टपकता महसूस हो रहा था। नीरा ने सोचा कि इतने बड़े लंड से चुदने के बाद चूत का मुँह अभी भी खुला ही होगा। फिर उसने आलोक के नर्म पड़ चुके लंड पर वीर्य चिपका हुआ देखा।
बिना कुछ कहे नीरा अपने अँगुलियाँ चिपचिपे लंड पे फिराने लगी और फिर उसे अपनी अँगुलियों और अँगूठे के बीच में दबा लिया और उसे अपने होंठों के पास ला कर अपना मुँह खोल दिया। आलोक को विस्मय में डालते हुए नीरा ने अपने होंठ उस लिसलिसे लंड पर कस दिए और चूसने लगी। आलोक को नीरा की जीभ अपने सुपाड़े पर फिरती हुई महसूस हुई और फिर नीरा ने बिना साँस घुटे जितनी दूर तक हो सकता था अपने होंठ ज्यादा से ज्यादा आगे फिसला दिए। जब नीरा को पूरा विश्वास हो गया कि उसने लंड पे चिपटा सारा वीर्य चाट लिया है, उसके बाद ही नीरा ने लंड अपने मुँह से बाहर निकाला। फिर अँगुलियों में आलोक का लंड पकड़ कर उस हिस्से को चाटने लगी जो वोह अपने मुँह में नहीं ले पायी थी। बाद में उसने आलोक की गोटियों पर भी अपनी जीभ फिरायी।

"हुम्म... अब तो ठीक है कि अभी भी टीशू पेपर चाहिए?" नीरा बोली।

आलोक ने अविश्वास से नीरा को ताकते हुए सिर्फ अपना सिर हिलाया। उसने अपनी पैंट पहनी और क्लास-रूम के फर्श पर सिर्फ अपने सैंडल पहने बैठी नंगी टीचर की तरफ देखा। आलोक ने नीरा को बॉय कहा तो नीरा आँख मार कर मुस्कुरा दी। आलोक के जाने के बाद भी नीरा वैसे ही फर्श पर अपनी ज़िंदगी की सबसे धुँआधार चुदाई के बाद की असीम संतुष्टि की दीप्ति में बैठी रही। नीरा ने खुद से वादा किया कि यह आखिरी बार नहीं था जब उसने इतने विशाल लौड़े से अपनी चूत चुदवायी थी। नीरा ने अपनी अँगुलियों से अपनी चूत के बाहर और जाँघों पे लगा वीर्य पोँछा और अपनी

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

अँगुलियाँ चाट कर वीर्य का स्वाद लिया। उसने देखा कि काफी सारा वीर्य उसकी चूत से टपक कर फ़र्श पे भी पड़ा था। नीरा को एक गंदी शरारत सूझी और वो झुक कर फ़र्श पे से वीर्य चाटने लगी।

ज़िंदगी नीरा के लिए अब काफी हसीन हो गयी थी।

एक औरत के लिए जो पहले चुदाई के लिए तरसती थी, वोह अब हफ्ते में कई बार चुदाई का मज़ा ले रही थी। रोहित जिसके साथ नीरा ने पहली बार व्याभिचार किया था, अभी भी नीरा को बहुत उत्तेजित करता था। नीरा इसका कारण नहीं जानती थी... शायद क्योंकि वोह पहला गैर-मर्द था जिसने उसे चोदा था या शायद इसलिए कि वोह नीरा का स्टूडेंट था... या फिर इसलिए की वोह अपने उम्र के हिसाब से ज्यादा जोशीला और उत्साही था। नितेश के बारे में नीरा का ख्याल अलग था। नितेश भी उसका स्टूडेंट था पर नीरा उसके जीवन में पहली औरत थी और इस बात का नीरा पर बहुत प्यारा असर पड़ा था। साथ ही दूसरी बात यह थी कि नितेश काफी शर्मिला था और इस कारण चुदाई के समय भी उसका भोलापन बरकरार रहता था। विक्रम तो पूरा जवान आदमी था और चुदाई में काफी अनुभवी था और नीरा को बहुत अच्छे से चोदता था। लेकिन जब भी उसे आलोक से चुदवाना होता तो उसके मुँह से ही नहीं बल्कि चूत से भी लार टपकने लगती थी। आलोक का विशाल लंड नीरा की चुदासी चूत ऐसे चोदता था जैसे और कोई नहीं चोद सकता था।

इस सब के बाद भी नीरा संतुष्ट नहीं थी और चुदाई के नए-नए अनुभव लेने के लिए लालियत रहने लगी। एक दिन होटल में चुदाई के दौर के बाद नीरा ने रोहित से पूछा कि क्या वोह और नितेश आपस में दोस्त हैं।

"दोस्त जैसे ही हैं।"

"क्या मतलब?" नीरा ने पूछा।

"मैं नितेश को जानता हूँ और कभी-कभार बातें भी होती हैं पर ऐसी कोई गाढ़ी दोस्ती नहीं है।"

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

“कैसा लड़का है... तुझे अच्छा लगता है?”

“हाँ... मेरे ख्याल से अच्छा लड़का है।”

“मुझे भी बहुत पसंद है।”

“क्या मतलब है आपका?” रोहित ने पूछा।

रोहित के प्रश्न का जवाब देने से पहले नीरा ने क्षणभर के लिए सोचा कि उसे अपनी योजना पे आगे बढ़ना चाहिए या नहीं। उसके किसी भी प्रेमी को दूसरे के बारे में नहीं पता था, सिवाय आलोक के... जिसने नीरा को नितेश के साथ देखा था। नीरा ने धीरे से लंबी साँस ली और खुद को शाँत किया।

“रोहित, जो कुछ मैं तुझे बताऊँगी... तू किसी से नहीं कहेगा... प्रॉमिस?”

“हाँ...ठीक है।”

“नहीं... मैं सीरियस हूँ।”

“अरे मैडम... मैंने कभी भी किसी को हमारे बारे में नहीं बताया है... किसी को भी नहीं! तो आप मुझ भरोसा कर सकती हैं।”

नीरा ने आगे झुक कर अपने स्टूडेंट के माथे पे प्यार से चूमा। *“थैंक्स... बात यह है कि नितेश और मैं अक्सर चुदाई करते हैं।”*

“क्या कह रही हो... सच में... वाह।”

“तुझे इसमें कुछ दिक्कत तो नहीं है?” नीरा ने चिंतित होते हुए पूछा कि कहीं रोहित के अहम को चोट ना लगे।

“नहीं... बिल्कुल नहीं.... मेरे ख्याल से तो यह बहुत अच्छी बात है... और किस-किस

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

से चुदवा रही हैं आप?"

"रोहित....! कभी किसी औरत से ऐसा सवाल नहीं करना चाहिए!"

"ओह सॉरी... लेकिन आपने ही बात शुरू की तो मैंने सोचा... ऑय एम सॉरी।"

"तेरी बात ठीक है कि मैंने ही यह बात शुरू की थी लेकिन मेरा मतलब अपनी सैक्स लाइफ के बारे में बात करना नहीं था।"

"तो फिर क्यों...?"

नीरा ने फिर लंबी साँस ले कर खुद को संयमित किया। *"मैं सोच रही थी अगर... उम्म्म.. शायद तुम दोनों... मेरा विचार था कि कदाचित तुम दोनों और मैं एक साथ..."*

"वाह क्या ख्याल है... मज़ा आ जायेगा।"

लेकिन नितेश के साथ नीरा का इस बारे में वार्तालाप बिल्कुल ही अलग था। नितेश को यह जान कर काफी धक्का लगा कि वोह अपनी टीचर का अकेला प्रेमी नहीं है और किसी दूसरे के सामने अपनी टीचर को चोदने के ख्याल के बारे में बहुत आशंकित था। लेकिन नीरा जानती थी कि जो कुछ वोह कहेगी, नितेश इंकार नहीं करेगा और फिर नीरा ने सब प्रबंध कर दिया।

नीरा ने पहले ही फ़ाईव स्टार होटल में स्पेशल सूईट बुक कर दिया। नीरा को यह सोच कर दुष्टता बरी चुलबुलाहट अनुभव हुई कि चुदाई के लिए वोह पैसा कर्च कर रही थी। नीरा उस दिन सबसे पहले होटल पहुँची और फिर रोहित भी मुस्कुराता हुआ जल्दी ही वहाँ पहुँच गया। दोनों होटल के लाऊँज के बार में ड्रिंक पीते हुए नितेश का इंतज़ार करने लगे। दस मिनट बीते... फिर बीस मिनट... लेकिन नितेश का कुछ पता नहीं था।

"लगता है नितेश की फट गयी," रोहित ने अपनी बीयर का घूँट पीते हुए कहा।

नीरा को काफी निराशा हुई पर फिर भी दोनों ने थोड़ा और इंतज़ार करने का फैसला

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

किया। बेचैनी और उत्कंठा में नीरा तीन पैग पी चूकी थी जब नितेश भागते हुए होटल के लाऊँज में दाखिल होता नज़र आया। रोहित ने हाथ हिला कर उसे इशारा किया तो वोह हाँफता हुआ उनके पास आया।

"सॉरी मेरी बाईक पंक्चर हो गयी थी... इसलिए देर हो गयी।"

"क्या लेगा... बीयर?" रोहित ने पूछा।

"नहीं... नहीं... यहाँ नहीं... सूईट में पीने-पिलाने का सब इंतज़ाम है...," नीरा अपना चौथा पैग खतम करती हुई खड़ी हो गयी और तीनों सूईट की तरफ चल पड़े। नीरा के कदम नशे और हाई हील के कारण थोड़े बहक रहे थे पर वोह बिना सहारे के चल सकती थी। सूईट में आ कर उन्होंने दरवाजा बंद किया और बाहर "डू नॉट डिस्टर्ब" का टैग लगा दिया। सूईट बहुत ही आलिशान था।

दोनों लड़के खड़े हुए अपनी टीचर के निर्देश की प्रतिक्षा करने लगे क्योंकि यह सब नीरा का ही प्लैन था। नीरा भी निश्चित नहीं थी कि कैसे शुरू करना है। नीरा ने अपनी बाँहें बढ़ा कर अपनी हथेलियाँ दोनों लड़कों के सीने पे रख दीं और धीरे से उन्हें ढकेलने लगी। दोनों लड़के पीछे की तरफ चलने लगे और जब दोनों की टाँगें पीछे पलंग से टकरायीं तो वोह बैठ गये और नीरा पलंग से दूर हट गयी।

नीरा ने एक बीयर की बोतल खोल कर दो ग्लासों में बीयर भरी और हैरान से बैठे अपने स्टूडेंट्स को एक-एक ग्लास पकड़ाया और फिर पीछे हट कर अपने ब्लाऊज़ के हुक खोलने लगी। दोनों लड़के बीयर पीते हुए चुपचाप बैठे अपनी टीचर को नंगी होते देख रहे थे। जल्दी ही नीरा का ब्लाउज़ ज़मीन पर था और नीरा की नंगी चूंचियाँ अब दोनों लड़कों के सामने थीं। नीरा को ब्रा पहनना पसंद नहीं था और सिर्फ कॉलेज में या फिर जहाँ जरूरी हो वहीं वो ब्रा पहनती थी। फिर नीरा ने अपनी साड़ी और पेटीकोट भी उतार दिया। अब वोह टीचर अपने दो स्टूडेंट्स के सामने सिर्फ पैंटी और मरून रंग के हाई हील सैंडल पहने खड़ी थी और उसकी पैंटी का इलास्टिक थोड़ा नीचे खिसका हुआ था।

नीरा दोनों लड़कों की तरफ देख कर कामुक्ता से मुस्कुरायी और अपनी पैंटी में हाथ

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

डाल कर ऊपर नीचे फिराने लगी। पैंटी इतनी झीनी थी कि लड़कों को अपनी टीचर की अँगुलियाँ उसकी गीली चूत पे फिसलती साफ नज़र आ रही थीं। नीरा को दोनों लड़कों की जींस में ऊभार नज़र आ रहा था और अभी से ही दोनों अपने सख्त लौड़ों को व्यवस्थित कर रहे थे।

नीरा फिर पलंग के पास आयी जहाँ उसके दोनों स्टूडेंट्स बैठे बीयर पी रहे थे। वोह रोहित के ठीक सामने खड़ी हो कर अपनी पैंटी में हाथ डाले अपनी क्लिट रगड़ते हुए अपने कुल्हे आगे-पीछे मटकाने लगी। फिर नीरा ने साईड में होकर नितेश के सामने भी ऐसा ही किया। रोहित ने अपना हाथ बढ़ाया तो नीरा ने उसके हाथ पे चपत मार कर उसे दूर हटा दिया। नीरा फिर दोनों लड़कों के बीच में खड़ी हो कर घूम गयी और फिर अपनी टाँगें सीधी रखते हुए कमर से झुक गयी। नीरा ने अपनी टाँगों के बीच में से अपने पीछे बैठे लड़कों को अपनी छोटी-सी झीनी पैंटी में ढकी गाँड को ताकते हुए देखा। नीरा की अँगुली अब उसकी चूत में अंदर-बाहर हो रही थी और यह भी लड़कों को दिख रहा था।

"चलो... आओ... खींच दो इसे नीचे," नीरा झुकी हुई अपनी टाँगों के बीच में से पीछे देखती हुई बोली।

रोहित ने पहले हाथ बढ़ा कर अपनी टीचर की पैंटी का इलास्टिक पकड़ा और उस महीन पैंटी को उसके चूत्तड़ों के ऊपर खींच दिया। इलास्टिक अब नीरा की चूत में घुसी अँगुली तक नीचे आ गया था। नितेश ने भी पैंटी पकड़ कर नीचे खींचने में रोहित की मदद की। जब पैंटी नीरा के पैरों तक आ गयी तो नीरा ने अपनी चूत में से अँगुली निकाली और और दोनों हाथों से अपने चूत फैलायी। दोनों लड़के फिर से पलंग पर पीछे बैठ कर अपनी बीयर खतम करते हुए हक्के-बक्के से अपनी टीचर का कामुक तमाशा देखने लगे। नीरा ने फिर अपनी टाँगों के बीच में से अपने हाथ हटाये और पीछे ले जा कर अपने चूत्तड़ पकड़ के उन्हें खींचते हुए अपने गाँड खोल दी। वोह कुछ पल ऐसे ही रही और फिर घुटने सीधे रखते हुए अपनी कमर से झुक गयी और अपनी गाँड को फैला कर अपने स्टूडेंट्स को अपनी गाँड का छोटा सा छेद दिखलाने लगी।

नीरा सीधी हो कर पीछे घूमी और रोहित के कँधे पर हाथ कर सहारा लेते हुए अपने पैरों से अपनी पैंटी निकाली। नीरा अब सिर्फ हाई हील सैंडल पहने अपने स्टूडेंट्स के

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

groups.yahoo.com/group/reena_kanwar2002 www.asstr.org/~reena_kanwar

सामने खड़ी थी जिन्होंने अभी भी पूरे कपड़े पहने हुए थे। नीरा अपने सैंडल पहने हुए ही बिस्तर पे कूद गयी। नितेश और रोहित ने गर्दन घूमा कर अपने पीछे अपनी टीचर को गद्दे पर उछलते देखा।

"अब तुम दोनों की बारी है," नीरा साईड टेबल से व्हिस्की की बोतल उठा कर उसका ढक्कन खोलते हुए बोली और बोतल से सीधे बोतल पे मुँह लगा कर व्हिस्की के घूँट पीने लगी। नीरा को नशे में मदहोश हो कर चुदवाना ज्यादा अच्छा लगता था।

दोनों लड़कों ने खड़े हो कर अपने जूते उतारे। नितेश ने अपनी कमीज़ अपने सिर के ऊपर से खींची और रोहित अपने पैंट उतारने लगा। नीरा एक हाथ से बोतल पकड़े व्हिस्की पीती हुई अपने सामने अपने स्टूडेंट्स को नंगा होते देख रही थी और दूसरे हाथ से अपनी क्लिट रगड़ रही थी। कुछ ही पलों में दोनों लड़के नंगे थे लेकिन दोनों अनिश्चित थे कि आगे क्या करना है। इसलिए दोनों पलंग के साईड पे खड़े हो गये और उनके कड़क लौड़े खड़े हुए उनकी टीचर नीरा की तरफ इशारा कर रहे थे।

नीरा ने एक बड़ा सा घूँट पी कर व्हिस्की की बोतल साईड टेबल पर रख दी और पीठ के बल लेटते हुए गद्दे पर अपनी दोनों तरफ हाथों से थपका कर इशारा किया। नीरा अब पर्याप्त नशे में थी। दोनों लड़के जल्दी से नीरा के दोनों तरफ आ गये और नीरा उन दोनों के लौड़े पकड़ कर सहलाने लगी। रोहित जो कि स्वभाव से ज्यादा उत्साही था, उसने झुक कर अपनी टीचर के एक मम्मे को अपने मुँह में ले लिया। जब नीरा ने आनंद भरी सिसकरी ली तो नितेश ने भी झुक कर नीरा के दूसरे मम्मे को अपने मुँह में ले लिया।

नीरा तो जैसे जन्नत में थी। नितेश अपने लंड से उसका हाथ हटाता महसूस हुआ तो नीरा को लगा कि शायद वोह झड़ने वाला है और नीरा ने अपना हाथ हटा लिया क्योंकि वोह नितेश को शर्मिंदा नहीं करना चाहती थी। लेकिन नीरा को बहुत आश्चर्य हुआ जब नितेश उसकी टाँगों के बीच में झुक कर उसकी चूत चाटने लगा। रोहित ने जब हरकत महसूस की तो उसने नीरा के मम्मे से मुँह हटाया। उसने पहले तो नितेश को अपनी टीचर की चूत चाटते देखा फिर रोहित ने नीरा के चेहरे की तरफ देखा। नीरा मुस्कुरायी तो रोहित ने झुक कर अपने होंठ नीरा के होंठों पे रख दिये और दोनों किस करने लगे। इसके बाद रोहित अपनी तीचर के दोनों तरफ पैर रख कर उसके सीने पर बैठ गया और

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

अपना कठोर लंड उसके होंठों पर दबा दिया। नीरा ने तत्परता से अपना मुँह खोल कर अपने स्टूडेंट का लंड अंदर ले लिया। अब नीरा एक स्टूडेंट का लंड चूस रही थी और दूसरा स्टूडेंट उसकी चूत चूस रहा था।

"ओह गॉड!" रोहित चींखा जब उसका उबलता हुआ वीर्य उसकी टीचर के मुँह में बहने लगा। नीरा इसके लिए तैयार नहीं थी। अपनी पीठ के बल लेटे होने के कारण नीरा को वीर्य का पहला फ़ुहारा सीधा अपनी हलक में घुसता हुआ महसूस हुआ। अपने मुँह में घुसे लंड के इर्द–गिर्द नीरा गोंगियाई और ठीक से साँस लेने के लिए उसने अपना सिर थोड़ा–सा ऊपर उठाया। ठीक उसी समय वीर्य की दूसरी धार से उसका मुँह भर गया। नीरा ने फ़ुर्ती से सारा वीर्य गटक लिया।

जब झड़ना बंद हो गया तो रोहित अपनी टीचर के ऊपर से उठा। नीरा की आँखें नितेश से मिलीं तो नीरा को लगा जैसे उसके चेहरे पर यह सोच कर मुस्कुराहट थी कि झड़ने वाला वोह पहला नहीं था। नितेश ने नीरा की चूत चाटना जारी रखा और जल्दी ही नीरा कामोन्माद की चरम सीमा पर पहुँच कर जोर–जोर से कराह रही थी। इससे पहले कि नीरा का कामोन्माद ठंडा पड़ता, नितेश ने अपने घुटनों के बल बैठ कर अपना लंड अपनी टीचर की चूत में पेल दिया। अंदर–बाहर कई धक्के मारने के बाद नितेश भी झड़ गया और तीनों हाँफते हुए होटल के सूईट के बिस्तर पे पड़े थे।

एक संक्षिप्त से आराम के बाद नीरा ने बैठ कर फिर व्हिस्की की बोतल उठा कर कुछ घूँट पिये। फिर रोहित उठ कर नीरा के ऊपर चढ़ गया और धेरी धीरे अपने लंड से उसकी चूत चोदने लगा। नीरा ने जब नितेश को अपने चेहरे के पास बुलाया तो नितेश बिस्तर से नीचे उतरने लगा। नीरा ने जब अपनी नशे में बोझल आँखों से नितेश को नीचे उतरते देखा तो नितेश ने बताया कि वोह अभी बाथरूम जा कर आ रहा है। बीयर पीने से उसे पेशाब लगा था। नीरा को फिर एक शरारत सूझी।

"मूतने के लिए बाथरूम में जाने की क्या जरूरत है... इधर आ मेरे पास और अपनी टीचर को अपने लंड के सुनहरे अमृत का पान करवा दो!"

नितेश को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ और रोहित भी चोदते–चोदते एक पल के लिए रुक गया लेकिन फिर अपनी कामुक छिनाल टीचर का मतलब समझ कर मुस्कुरा

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

दिया और जोर–जोर से धक्के लगाने लगा। नितेश भोंचक्का सा बिस्तर पे वापस चढ़ कर नीरा के सिर के पास आ गया।

मेरे मुँह में अपना लंड डाल कर धीरे से अपने अमृत की धार छोड़। नितेश ने नीरा के लिपस्टिक लगे होंठों के बीच अपना लंड घुसेड़ कर धीरे मूतना शुरू कर दिया। नीरा को नितेश के गरम पेशाब का खारा–सा स्वाद बहुत अच्छा लग रहा था और पेशाब गटकते हुए वोह अपनी इस हरकत की विकृतता के एहसास से बहुत उत्तेजित हो गयी और रोहित के लम्ड के इर्द–गिर्द अपनी चूत सिकोड़ कर झड़ने लगी। जब नितेश का मूतना बंद हो गया तो उसके बाद भी नीरा ने उसका लंड चूसना ज़ारी रखा। नितेश का लंड फिर फूल कर नीरा के मुँह मे कड़क हो गया। रोहित अभी भी नीरा की चूत में अपना लंड पूरे जोश से ठाँस रहा था।

थोड़ी देर में नीरा ने नितेश को पीछे हटाया तो नितेश हैरानी से पीछे हटा और उसका लंड नीरा के मुँह से बाहर आ गया। लेकिन नितेश की निराशा जल्दी ही खतम हो गयी जब वोह नितेश का लंड अपनी चूँचियों के बीच में दबा कर रगड़ने लगी। नितेश भी आगे पीछे हो कर अपनी टीचर की चूँचियाँ चोदने लगा। इस नये अनुभव से नितेश बहुत गरम हो गया और जल्दी ही अपनी टीचर के चेहरे और गर्दन पे अपने वीर्य की पिचकारी छोड़ दी। जब नितेश उसके ऊपर से हटा तो रोहित को अपनी टीचर का वीर्य से सना चेहरा दिखायी दिया और इस दृश्य से वोह भी झड़ने के निकट आ गया। रोहित ने उत्तेजना में अपना लंड नीरा की चूत से बाहर निकाल कर अपनी मुठ्ठी में एक–दो बार आगे पीछे करके अपने वीर्य की जोरदार धार अपनी टीचर की चूंचियों तक छोड़ दी। उसके वीर्य की बाकी धारें नीरा के पेट पर गेरीं और आखिर में काफी सारा वीर्य नीरा की चूत के पास बह कर इक्ट्ठा हो गया।

"तुम लड़के बहुत मादरचोद हो... सालों..." वीर्य से सने अपने बदन को देखते हुए नीरा बोली। उसे अभी भी अपने चेहरे से वीर्य टपकता महसूस हो रहा था। *"मुझे लगता है कि अब मुझे नहाना पड़ेगा।"*
नीरा जब बिस्तर से उठ कर खड़ी हुई तो नशे में उसका सिर घूम रहा था। वोह अपने हाई हील सैंडलों में नशे से डगमगाती बाथरूम में गयी और खुद को शीशे में देखा। वोह किसी ब्यूकाके ब्लू–फिल्म की नायिका जैसी दिख रही थी। नीरा चंचलता से हँसी और सैंडल पहने ही शॉवर में घुस गयी। उसे शॉवर का गुनगुना पानी काफी अच्छा

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

लगा।

जब नीरा बाथरूम से बाहर निकली तो उसे अपने पेट में गुर्राहट महसूस हुई। उसने घड़ी देखी तो एहसास हुआ कि उनकी चुदाई काफी समय चली थी। उसने लड़कों से पूछा कि उन्हें भूख लगी है क्या... तो दोनों ने 'हाँ' कहा। वोह कमरे में खाना ऑर्डर नहीं करना चाहते थे इसलिए होटल के रेस्टोरेंट में जाने का निश्चय किया। तीनों ने अपने-अपने कपड़े पहने और रेस्टोरेंट में जाने से पहले नीरा ने एक बार रोहित का लंड मुँह में लेकर उसका भी पेशाब चटखारे ले कर पिया।

नीरा के कदम नशे में काफी बहक रहे थे। नितेश ने उसकी चाल देख कर एक बार कहा भी कि खाना सूईट में ही मँगवा लेते हैं पर नीरा बोली कि वोह खुद को संभाल सकती है। रोहित ने नीरा को सहारा दिया और तीनों ने रेस्टोरेंट में आकर खाने का ऑर्डर दिया। नीरा ने यहाँ भी अपने लिये कॉकटेल मँगवायी। रोहित और नितेश दोनों ही नीरा को कॉलेज के बाहर होटल के कमरों में कई बार अलग-अलग चोद चूके थे और उन्हें एहसास था कि नीरा को अपने पीने पर कोई संयम नहीं था। इसलिए उन्होंने उसे मना नहीं किया जब्कि वोह जानते थे कि सूईट में वापस जाते वक्त उन दोनों को नीरा को पकड़ कर सहारा देना पड़ेगा।

जब वोह लोग खाना आने का इंतज़ार कर रहे थे रोहित को अपनी टाँगों के बीच नीरा के सैंडल की हील खरोंचती महसूस हुई। उसने नज़र उठा कर देखा तो नीरा आँखें मटका कर मुस्कुराने लगी। नितेश को भी उस समय अपनी गोद में नीरा का पैर महसूस हुआ। टेबल क्लॉथ के कारण किसी और को कुछ दिख नहीं सकता था। नीरा की नशे और वासना से भरी आँखों में शरारत नज़र आ रही थी। नीरा उन लड़कों की टाँगों के बीच में अपने पैर आगे पीछे करके उनके लौड़ों को अपने सैंडलों से रगड़ने लगी। अपना ड्रिंक पीते हुए वोह धीरे से फुसफुसा कर बोली, *"घबड़ाओ नहीं... अपने हथियार बाहर निकाल कर मेरे पैरों पे रगड़ो।"*

दोनों लड़कों ने आसपास देखा फिर धीरे से अपनी ज़िप खोल के अपने लौड़े बाहर निकाले और नीरा के सैंडलों और पैरों पे रगड़ने लगे। नीरा चुपचाप अपना ड्रिंक पीती हुई अपने परों पे उनके लौड़ों के स्पर्श का रस ले रही थी। रोहित ने अपनी टीचर का पैर पकड़ कर अपना लौड़ा पैर के तले और सैंडल के बीच में घुसा दिया जिससे नीरा

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

अचानक चिंहुक उठी पर आसपास किसी ने ध्यान नहीं दिया। नितेश भी नीरा का पैर पकड़ कर जोर–जोर से उसका सैंडल अपने लंड पे दबाते हुए रगड़ रहा था। दोनों स्टूडेंट्स जल्दी ही झड़ गये और अपने–अपने वीर्य की धार अपनी टीचर के पैरों और सैंडलों पर छोड़ दी। नीरा को अपने पैरों पर गरम वीर्य बहुत सुहाना लगा और उसकी खुद की चूत से भी रस बह रहा था। जब तक वेटर खान लाया, दोनों लड़कों ने अपने लंड वापस पैंट में डाल कर ज़िप बंद कर लीं और नीरा ने वीर्य में तरबतर अपने सैंडल युक्त पैर नीचे कर लिए। उन्होंने जल्दी से खाना खाया। नीरा इस दौरान दो ड्रिंक पी चूकी थी और जैसा के उसके स्टूडेंट्स ने सोचा था... नीरा काफी नशे में थी। जब नीरा खड़ी हो कर बूरी तरह डगमगाने लगी तो नितेश और रोहित ने नीरा की एक–एक बाँह अपने कँधों पे डालीं और अपने हाथ उसकी कमर मे डाल कर सहारा देते हुए कमरे में ले जाने लगे। सौभाग्य से रेस्टोरेंट लगभग खाली था और नीरा ने भी वहाँ कुछ बखेड़ा नहीं किया। फाईव स्टार होटल के स्टाफ़ के लिये तो ऐसी घटना कोई नयी बात नहीं थी।

सूईट में आकर जब वोह नीरा को बिस्तर पर बिठाने लगे तो नीरा ने उन्हें पीछे धकेला और अपने कपड़े उतारने लगी। *“बहुत अच्छा लग रहा मुझे.... चलो नंगे हो जाओ... अभी तो और चुदाई करनी है...”* नीरा की आवाज भी बहक रही थी। कुछ ही पलों में तीनों नंगे थे। नीरा ने अपने पैरों और सैंडलों पे अपने स्टूडेंट्स का वीर्य देखा तो कुटिलता से उन्हें देख कर मुस्कुराई। उसके पैर की अँगुलियाँ वीर्य के सूखने से चिपचिपा रही थीं। फिर बिस्तर पर बैठ कर नीरा ने दोनों को अपने सामने खड़ा होने को कहा और उनके लौड़े चूसने लगी। वोह कुछ देर एक का लंड चूसती और फिर दूसरे का। इसी तरह बारी–बारी से अदल–बदल कर दोनों लंड नीरा चूस रही थी। जब उसके स्टूडेंट्स के लंड सख्त हो कर खड़े हो गये तो नीरा ने ऊपर देखा।

“क्या तुम दोनों में से किसी ने कभी किसी लड़की की गाँड मारी है?” नीरा ने बहकती हुई आवाज में पूछा। दोनों लड़के अपनी टीचर के मुँह से यह सवाल सुन कर चौंक गये और ’ना’ में अपने सिर हिला दिए। फिर नीरा ने पूछा, *“क्या गाँड मारना चाहोगे?”*

इस बार दोनों के सिर ’हाँ’ जल्दी–जल्दी ऊपर–नीचे हिले। नीरा उनका उत्साह देख कर हँस दी। वोह फिर खड़ी हो कर बाथरूम की तरफ जाने लगी पर इससे पहले कि

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

लड़के उसे पकड़ते, नीरा इतनी ऊँची हील के सैंडलों में नशे में संतुलन नहीं रख पायी और दो कदम के बाद ही लड़खड़ा कर धड़ाम से गिर पड़ी। कार्पेट की वजह से उसे लगी नहीं। उसने रोहित को बाथरूम से बॉडी लोशन लाने को कहा और नितेश ने अपनी टीचर को सहारा दे कर खड़ा किया और बिस्तर पे बिठाया। रोहित जब लोशन ले कर आया तो नीरा ने एक बार दोनों के लौड़ों को देखा। नितेश का लंड छोटा तो नहीं था पर नीरा ने निश्चित किया कि वोह रोहित के लंड से कुछ पतला था। अचानक नीरा के मन में आशंका होने लगी पर फिर नशे की मदहोशी में उसने गाँड मरवाने का निश्चय कायम रखा। नीरा ने थोडा सा लोशन नितेश के लौड़े के सुपाड़े पर लगाया। जब नितेश उसे अपने लंड पे मलने को हुआ तो नीरा ने उसे रोक दिया। फिर वोह पल्ट कर बिस्तर पर झुक गयी। नीरा के सैंडल युक्त पैर ज़मीन पर थे और उसका पेट और मुँह गद्दे पर टिका था। नीरा ने अपने चूत्तड़ पकड़ कर फैलाये और रोहित से गाँड के छेड पर लोशन लगाने को कहा। नीरा की झुरझुरी छूट गयी जब उसे अपने गाँड-छिद्र पे ठंडा लोशन और अपने स्टूडेंट की अँगुली अंदर घुसती महसूस हुई।

जब रोहित ने ठीक से नीरा की गाँड में लोशन लगा दिया तो नीरा ने नितेश को आगे बढ़ने को कहा। नीरा को नितेश के हाथ अपने चूत्तड़ों पे महसूस हुए, फिर नितेश ने उसकी गाँड फैलायी और फिर नीरा को उसके लंड का सुपाड़ा अपनी गाँड के छेद पे महसूस हुआ। नीरा को जब अपनी गाँड मे लंड घुसता महसूस हुआ तो उसका बदन अकड़ गया पर फिर खुद को शाँत और ढीला करने के लिए नीरा ने गहरी साँसें लीं। उसके स्टूडेंट का लौड़ा धीरे-धीरे उसकी गाँड में थोड़ा-थोड़ा आगे घुस रहा था और फिर नीरा को नितेश की जाँघें अपने चूत्तड़ों पे सटती महसूस हुईं। नितेश का लंड जड़ तक नीरा की गाँड में घुस चुका था और नीरा ने अपनी बाँहें खिसका कर अपना पूरा वजन अपनी बाँहों पर डाल दिया।

“यह तो बहुत तंग है,” नितेश बोला, *“आप ठीक हैं... ढिल्लों मैडम?”*

“हाँ... मैं ठीक ही हूँ... उम्म्म... गाँड में लंड अजीब सा लग रहा है।”
नितेश ने धीरे-धीरे आगे-पीछे हो कर अपना लंड नीरा की गाँड में पेलने लगा। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वोह किसी औरत की गाँड में अपना लंड चोद रहा है... वोह औरत जो कोई और नहीं बल्कि उसकी टीचर थी। नितेश को अपनी टीचर की गाँड उसकी चूत से ज्यादा गरम और ज्यादा आरामदेह लग रही थी और लंड के इर्द-

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

गिर्द काफी टाइट थी। नीरा की गाँड की माँसपेशियों का दबाव और स्पंदन वो अपने लंड पे महसूस कर पा रहा था। अपनी टीचर के चूत्तड़ों को पकड़ कर वोह अब जोर–जोर से उसकी गाँड में लंड पेल रहा था।

"नितेश और जोर से! तेज और तेज! मार ले मेरी गाँड... हरामी! बहुत मज़ा आ रहा है" नीरा भी मस्ती में नितेश को उक्साने लगी और अपने चूत्तड़ पीछे उचका कर उसका लंड अपनी गाँड में लेने लगी।

"ठीक है... अब रोहित को भी मौका दो," नीरा थोड़ी देर बाद बोली। मदहोशी और कामोन्माद में नीरा ठीक से बोल भी नहीं पा रही थी।

"लेकिन मैडम... मैं अभी झड़ा नहीं हूँ," नितेश ने कराहते हुए फरियाद की।

"तुझे फिर से मौका मिलेगा.... रोहित को भी थोड़ी देर मेरी गाँड में लंड पेलने दो।"

नीरा ने गहरी साँस ली जब नितेश ने उसकी गाँड में से अपना लंड बाहर खींचा। जो गाँड कुछ क्षण पहले भरी–भरी और ठूँसी हुई थी वोह अब बहुत खाली महसूस हो रही थी। लेकिन नीरा को ज्यादा रुकना नहीं पड़ा क्योंकि कुछ ही पलों में उसका दूसरा स्टूडेंट उसके दोनों चूत्तड़ों को फैला कर अपना लंड उसकी गाँड में धकेल रहा था। नीरा को खुशी हुई कि उसने नितेश को पहले अपनी गाँड मारने का मौका दिया था क्योंकि रोहित बिकुल भी दयालु नहीं था। जल्दी ही रोहित दनादन अपना लौड़ा नीरा की गाँड में पेल रहा था।

"तो... कैसा लगा रोहित?" नीरा ने पूछा।

"काफी मज़ा आ रहा है पर फिर भी मेरे ख्याल से चूत में ज्यादा मज़ा है," रोहित बोला।

"रोहित मेरे पास एक आइडिया है," नीरा बोली, *"अपना लंड बाहर निकाल.... धीरे से प्लीज़।"*

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

समाप्त

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.